सूफीमत/वाद

असि०प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम०कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो०- 8051796740

प्रारम्भिक मध्यकाल में भारत में हिन्दू तथा इस्लाम धर्म के दो समानान्तर आन्दोलनों का उदय हुआ जो भक्ति एवं सूफी आन्दोलनों के नाम से प्रसिद्ध हुए। पन्द्रहवीं एवं सोलहवीं शताब्दियों में इनका पूर्ण विकास हुआ। इसी क्रम में ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दियों के दरम्यान अनेक सूफी भारत आकर बस गये जिनमें से सबसे प्रमुख और अति प्रसिद्ध सन्त शेख मुइनुद्दीन चिश्ती थे। जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान III के शासनकाल में अजमेर शरीफ को अपना निवास स्थान बनाया था।

ये दोनों ही आन्दोलन लोकतांत्रिक आन्दोलन थे जिन्होंने जनभाषा में सामान्य धर्म का प्रचार किया। इस आन्दोलन से जुड़े संतो को न तो कोई राजनीतिक संरक्षण ही मिला और न ही इन पर राजनीतिक गतिविधियों का कोई प्रभाव ही पड़ा। दोनों ही आन्दोलन में कुछ समानतायें मौजूद थी। दोनों में ही समर्पण भाव के साथ-साथ बौद्धिकता के तत्व भी मिलते हैं और दोनों ही कर्मकाण्ड तथा विधि-विधान की अपेक्षा एक ही परम सत्ता की खोज और उसके प्रति प्रेम को अधिक महत्व प्रदान करते हैं। प्रेम और उदारता सूफी व भक्ति आन्दोलनों के मूल भाव है।

सूफीमत का उद्‌भव :—

भारत में सूफीमत का आगमन दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पहले ही हो गया था लेकिन तुर्की शासन की स्थापना के उपरान्त विभिन्न इस्लामी देशों से भारत में सूफियों के एक बड़े समूह का आव्रजन हुआ जो हिन्दुस्तान के अनेक भागों में आकर बस गये। प्रारम्भिक सूफियों ने यद्यपि अपने विचार कुरान की कुछ आयतों तथा पैगम्बर की परम्पराओं से ग्रहण किये थे तथापि उन्होंने इनकी रहस्यवादी व्याख्या की।

अरबी लेखक अबू नसराल सराज का मानना है कि सूफी शब्द की व्युत्पत्ति 'सूफ (ऊन)' शब्द से हुई है। कुछ विद्वानों ने इसकी व्युत्पत्ति ग्रीक शब्द 'सोफिया' (ज्ञान) से मानी है। वैसे विद्वानों की सामान्य राय है कि इस शब्द की उत्पत्ति 'सफा' शब्द से हुई है। उसके अनुसार जो लोग धर्मपरायण होते थे, वे सूफी कहलाते थे। ऐसा माना जाता है कि सूफी शब्द का पहला प्रयोग लेखक बसरा के जाहिज (869 ई०) थे।

P.T.O

सूफी विचारधारा :—

सूफीमत इस्लामी रहस्यवाद के लिये प्रयुक्त होने वाला एक सामान्य शब्द है। सूफीयों ने मोहम्मद के पैगम्बरवाद तथा कुरान की सत्ता को स्वीकार किया लेकिन समयानुसार उन्होंने ईसाई धर्म, नव-प्लेटोवाद, जरथुस्त्र धर्म, बौद्ध धर्म तथा हिन्दू दार्शनिक पद्धतियों के विविध विचारों और व्यवहारों को आत्मसात किया। सूफीयों ने प्रेमी और प्रेमिका के आपसी संबंध को आत्मा और परमात्मा के बीच के संबंध की अवधारणा के रूप में स्वीकार किया। सूफी रहस्यवाद वहदत-उल-वुजूद या परमात्मा के एकत्व के सिद्धान्त से उत्पन्न हुआ था जिसकी समता हक (स्रष्टा) और खल्क (सृजन) से की गई है।

सूफी संतो ने सूफीमत को आजीविका का साधन नहीं बनाया। उन्होंने जीविकोपार्जन के महत्व पर बल दिया। यद्यपि हम कुछ सूफीयों को पाते हैं जिन्होंने अपने भोग-विलास के लिये अपने समकालीन शासकों का साथ दिया और उनसे अथाह सम्पत्ति भी प्राप्त की। दूसरी तरफ सूफियों ने आध्यात्मिक अस्तित्व की उपलब्धि के लिये ब्रह्मचर्य और संसार के पूर्ण त्याग पर जोर नहीं दिया। भारत में विशेषकर चिश्ती और सुहरावर्दी सिलसिलों के सूफियों ने ईश्वर की आराधना के रूप में समा और रक्स (संगीत और नृत्य) को ईश्वर की आराधना के लिये अपनाया। उन्होंने किसी प्रकार के मनोरंजनपूर्ण संगीत का आश्रय नहीं लिया। मजलिस-ए-समा जिसका वे समर्थन करते थे, मजलिस-ए-तराब मजलिस-ए-समा, से पूर्णतया भिन्न था। पीरी-मुरीदी नाम से ज्ञात आध्यात्मिक गुरु के आदेश की पद्धति भी सूफीमत में प्रचलित थी। जो लोग सूफी संतों के विशिष्ट बन्धुत्व को अपनाते थे उन्हें मुरीद शिष्य कहा जाता था।

सूफी सम्प्रदाय या सिलसिला :—

सूफी संत सिलसिलों या सम्प्रदायों में संगठित थे, जिनका नाम सिलसिले के संस्थापक के नाम या उपनाम पर रखा गया था जैसे - चिश्ती, सुहरावर्दी, नक्शबन्दी आदि। प्रत्येक सूफी सिलसिले का एक खानकाह या आश्रम होता था। अबुलफजल के अनुसार 16वीं सदी में भारत में कम से कम चौदह सिलसिले थे। इन सिलसिलों में चिश्ती तथा फिरदौसी दो ऐसे सिलसिले थे जो भारत के बाहर के होते हुए भी भारत में आकर अपने को स्थापित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की थी। दो उप सिलसिले फिरदौसी तथा सुत्तारी सुहरावर्दी सिलसिले की प्रशाखा के रूप में बिहार और बंगाल में सक्रिय थे। इस प्रकार अबुल फजल द्वारा कथित चौदह सिलसिलों में कम से कम

छ: सिलसिले वास्तविक एवं व्यवहारिक रूप में प्रभावी रूप से सक्रिय थे जिनके विषय में वस्तुनिष्ठ रूप से जानना आवश्यक है।

विभिन्न सिलसिलों से जुड़े प्रमुख सन्त :—

शेख निजामुद्दीन चिश्ती जो ख्वाजा अजमेरी के नाम से प्रसिद्ध थे ने भारत में चिश्ती सिलसिले की स्थापना की थी। चिश्ती सिलसिले के लिये यह एक स्थायी गौरव की बात है कि इसने ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, फरीदुद्दीन गंज-ए-शंकर, शेख निजामुद्दीन औलिया, नासिरुद्दीन चिराग-ए-दिल्ली, बुरहानुद्दीन गरीब, और दक्कन में गेसूदराज जैसे महान आध्यात्मिक विभूतियों को पैदा किया।

सल्तनत काल में सक्रिय एक दूसरा सिलसिला सुहरावर्दी था जिसका मुख्यालय मुल्तान में था और बाद में यह सिन्ध तक फैल गया। भारत में इसकी स्थापना शेख बहाउद्दीन जकारिया ने की थी। इसके बाद फिरदौसी सिलसिला आता है जो मुख्यतः बिहार तक सीमित था। इसकी स्थापना शेख बदरुद्दीन समरकन्दी ने की थी। शेख सर्फुद्दीन याहया मनेरी ने इसका प्रचार-प्रसार किया। इसके बाद 15वीं शताब्दी में कादिरी तथा सुत्तारी सिलसिले की शुरुआत हुई भारत में कादिरी सिलसिले की स्थापना नियामतुल्ला कादिरी तथा सुत्तारी सिलसिले की स्थापना अब्दुल्लाह सुत्तारी ने की थी। कादिरिया सिलसिला उत्तर प्रदेश तथा दक्कन में फैला जबकि सुत्तारी सिलसिला का मुख्य प्रचार मध्यप्रदेश तथा गुजरात के क्षेत्र में हुआ। अकबर के शासनकाल में छः प्रमुख सिलसिलों में से अन्तिम नक्शबन्दी सिलसिले की स्थापना हुई इसकी स्थापना ख्वाजा बाकी बिल्लाह ने की थी तथा शेख अहमद सरहिन्दी इसके सबसे प्रसिद्ध सन्त थे जो मुजद्दिद आलफसानी के नाम से प्रसिद्ध थे।

17वीं सदी में सूफीमत ने साम्प्रदायिक भेदभाव की जंजीरों को छिन्न-भिन्न कर दिया तथा मानवजाति की एकता का उपदेश दिया। ऐसे सूफी संत नव-सूफी के रूप में प्रसिद्ध हुए। दिल्ली में भारी साहब के नाम से ऐसे ही एक प्रसिद्ध सूफी संत हुए थे।